Tender Heart High School, Sector-38 B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं
विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ - 6 'बड़े घर की बेटी' (कहानी) लेखक - मुंशी प्रेमचंद

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तक 'साहित्य सागर' की पृष्ठ संख्या-32 में दिए पाठ-6 'बड़े घर की बेटी' नामक कहानी पढ़ेंगे।

बच्चो! इस कहानी के लेखक हिन्दी गद्य साहित्य के पितामह और कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द जिनका मूल नाम धनपतराय था। उन्होंने दस दिसम्बर, 1910 में प्रेमचन्द के नाम से उर्दू पत्रिका 'ज़माना' में अपनी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' छपवाई थी। इस कहानी की मुख्य पात्रा आनन्दी है। इसकी प्रेरणा उन्हें अपनी माँ से मिली अर्थात् उन्होंने अपनी माँ से प्रेरित होकर इस कहानी की पात्रा को बनाया था। इस कहानी में आर्थिक, पारिवारिक और संस्कारिक मूल्य हैं उनका समावेश हमारे देश व समाज की संस्कृति की प्रतिध्वनि है। उन्होंने 'आनंदी' के माध्यम से यथार्थ के साथ एक आदर्श स्थापित करने का प्रयास किया है।

'बड़े घर की बेटी' कहानी में संयुक्त परिवार का महत्त्व है। इसमें लेखक का उद्देश्य मध्य वर्ग की घरेलू समस्याओं को सुलझाकर संगठित परिवार में मिलजुल कर प्रेम से रहने का संदेश देना है। परिवार में सामंजस्य बनाए रखने में घर की बहुओं की अहम् भूमिका होती है।

इस कहानी में 'बड़े घर' का अर्थ एक घटना के बाद बदल जाता है और तब इस कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट होती है। कहानी में आनंदी जब तक स्थिति नहीं सँभालती तब तक 'बड़े घर' का अर्थ आर्थिक रूप से संपन्न, सुख-सुविधाओं वाला घर था जहाँ से आनंदी आई थी, उसे बड़ा घर कहा गया था। जैसे ही आनंदी विवेक से बिगड़ती हुई बात संभाल लेती है अर्थात् घर को टूटने से बचा लेती है, यहाँ 'बड़े घर' का अर्थ बदल जाता है और शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट हो जाती है कि 'बड़ा घर' पैसे से संपन्न घर नहीं बल्कि ऐसा घर जो संस्कार सिखाता है, जीवन मूल्यों की शिक्षा देता है, जहाँ परिवार के सदस्य जीवन-मूल्यों का पालन करते हुए आदर्श स्थापित करते हैं। वही सच्चे अर्थ में बड़ा घर होता है। इस प्रकार यह कहानी परिवार को संगठित करते हुए प्रेम, सौहार्द्र से एक-दूसरे की भावनाओं को समझकर उनका सहयोग करते हुए जीवन यापन करने की प्रेरणा देती है।

इस कहानी में चार पात्र हैं :- आनंदी, श्रीकंठसिंह, लालबिहारी एवं वेनीमाधव। आइए इन पात्रों के बारे में भी जान लेते हैं।

(क) आनन्दी - आनन्दी एक बड़े उच्च कुल की लड़की थी। वह रूपवती और गुणवती थी। वह वेनीमाधव की बहू और श्रीकंठ की पत्नी थी। अतः वह एक सुशील, सभ्य, स्वतन्त्र विचारों वाली, स्वाभिमानी, व्यवहार कुशल तथा पति परायण नारी है।

(ख) श्रीकंठ सिंह - श्रीकंठ सिंह गौरीपुर गाँव के जमींदार वेनीमाधव सिंह के बड़े बेटे थे। वे बी.ए. थे। उनका चेहरा कांतिहीन था। वे पाश्चात्य सामाजिक प्रथाओं के विरोधी और संयुक्त परिवार के समर्थक थे। दशहरे के दिनों में वे रामलीला में किसी न किसी पात्र का अभिनय करते थे। वे अपने छोटे भाई से प्रेम करते थे,

परन्तु पत्नी के प्रति अपना उत्तरदायित्व भी समझते थे। इस प्रकार वे पढ़े-लिखे, भारतीयता के प्रशंसक, सम्मिलित कुटुंब का समर्थन करने वाले, पिता का सम्मान करने वाले तथा पत्नी के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करने वाले नौकरी पेशा व्यक्ति थे।

(ग) लालबिहारी - लालबिहारी बेनीमाधव सिंह का छोटा पुत्र था। वह दोहरे बदन का सजीला जवान था। भरा हुआ मुखड़ा और चौड़ी छाती थी। सवेरे उठते ही वह भैंस का दो सेर ताज़ा दूध पी जाता था। वह थोड़ा क्रोधी था परन्तु दिल का अच्छा था। वह अपने बड़े भाई का आदर करता था। भाई के लिए वह घर छोड़ने को भी तैयार हो गया था।

(घ) बेनीमाधव सिंह - बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के ज़मींदार थे। उनके दादा-परदादा धन-सम्पन्न थे। उनकी वार्षिक आय एक हज़ार से अधिक न थी। उनका मानना था कि स्त्रियों को सिर नहीं चढ़ाना चाहिए। वे परिवार को बाँधकर रखना चाहते थे इसलिए दोनों भाइयों में सुलह करते हैं। वे गाँव वालों की भावनाओं को समझते थे।

बच्चो! कहानी के आरंभ में यह बताया गया है कि बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के जमींदार थे। उनके पितामह (दादा जी) किसी समय बहुत अमीर थे जिन्होंने गाँव में तालाब और मन्दिर बनवाए थे। उस समय उनके दरवाज़े पर हाथी भी बँधा होता था पर अब उसकी जगह एक बूढ़ी भैंस है। बेनीमाधव अपनी आधी से अधिक संपत्ति वकीलों में भेंट कर चुके थे। अब उनकी आय एक हज़ार रुपए वार्षिक से अधिक नहीं थी। बेनीमाधव के दो पुत्र थे। बड़ा बेटा श्रीकंठ सिंह बी. ए. पास एवं दुबला पतला नौजवान है जबकि लाल बिहारी दोहरे बदन का सजीला जवान है, लेकिन वह कुछ नहीं करता है।

श्रीकंठ सिंह ने बी.ए की डिग्री प्राप्त की थी। शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे स्वास्थ्य और भोजन की ओर अधिक ध्यान नहीं देते थे। इसलिए उनका शरीर दुर्बल रह गया और चेहरा कांतिहीन (आभाविहीन। तेजहीन) बन गया।

श्रीकंठ प्राचीन सभ्यता के पक्षधर थे और पाश्चात्य सामाजिक प्रथाओं के विरोधी थे। प्राचीन सभ्यता का गुणगान उनकी प्रकृति का प्रधान अंग था। बेशक उन्होंने अंग्रेज़ी की डिग्री प्राप्त की थी किन्तु वे इसकी निन्दा करने से भी पीछे नहीं हटते थे। गौरीपुर गाँव में श्रीकंठ ही रामलीला के जन्मदाता थे। वे स्वयं किसी न किसी पात्र का अभिनय भी किया करते थे। वे परिवार की एकजुटता पर बल देते थे। उनका मानना था कि परिवार में एकजुटता की भावना होना आवश्यक है, मिलजुल कर रहने का भाव सबके मन में होना चाहिए। अत: संयुक्त परिवार ही सफल परिवार की नींव है अर्थात् श्रीकंठ सम्मिलित कुटुंब (परिवार) के उपासक थे। यही कारण था कि गाँव की स्त्रियाँ श्रीकंठ की निंदक थीं क्योंकि वे सम्मिलित कुटुंब के पक्षधर नहीं थीं। उनकी कुटुंब में मिलकर रहने की बजाए परिवार अलग बसाने में रुचि थी। श्रीकंठ इसे देश और जाति दोनों के लिए हानिकारक मानते थे। लेकिन उनकी पत्नी का विचार था कि यदि कुछ सहने पर भी परिवार के साथ निर्वाह न हो सके तो रोज़-रोज़ की कलह से जीवन को नष्ट करने की अपेक्षा यही अच्छा है कि अपनी खिचड़ी अलग पकाई जाए या परिवार से अलग हो लिया जाए।

श्रीकंठ की पत्नी आनन्दी एक बड़े उच्च कुल की लड़की थी। वह भूपसिंह की चौथी बेटी थी। भूपसिंह एक छोटे से राज्य के ज़मींदार थे। वे बहुत अमीर थे। सुख-सुविधाओं की उनके पास कोई कमी नहीं थी। वह उदार चित्त वाले प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। आनंदी

अपनी सब बहनों से अधिक रूपवती और गुणवती थी।
भूपसिंह आनन्दी की शादी को लेकर परेशान रहते थे क्योंकि कम खर्च में वे आनन्दी की शादी अच्छे घर में करना चाहते थे। वे धर्मसंकट में थे और ऋण के बोझ को बढ़ाना नहीं चाहते थे। वे आनन्दी का विवाह ऐसे-वैसे घर में नहीं करना चाहते थे जहाँ आनन्दी स्वयं को भाग्यहीन समझे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे आनन्दी का विवाह कहाँ करें?

एक बार श्रीकंठ सिंह, भूपसिंह के पास चंदा माँगने के लिए आए। भूपसिंह श्रीकंठ के स्वभाव पर रीझ गए और इस प्रकार एक सुयोग्य लड़के से बिना ऋण लिए भूप सिंह ने धूमधाम से आनन्दी का विवाह श्रीकंठ से कर दिया।

बच्चो! आज हम इस कहानी को यहीं विराम देते हैं। शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ाया जाएगा। सभी छात्र आज हमने जितना भी पढ़ा है उसे पुनः पढ़ेंगे व समझेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:-
"श्रीकंठ की दशा बिलकुल विपरीत थी।"

प्रश्न (i) श्रीकंठ सिंह की शारीरिक बनावट किसके विपरीत थी और कैसे?

प्रश्न (ii) सम्मिलित कुटुंब के संबंध में श्रीकंठ के क्या विचार थे?

प्रश्न (iii) सम्मिलित कुटुंब के संबंध में श्रीकंठ और उनकी पत्नी के विचारों का अंतर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न (iv) श्रीकंठ की पत्नी का संबंध किस कुल से था? स्पष्ट कीजिए।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]